भारतीय वैश्विक परिषद

समाचार पत्रक

अंक : 31 | अक्टूबर - दिसम्बर, 2022

भारत के माननीय **उप राष्ट्रपति** तथा भारतीय वैश्विक परिषद के अध्यक्ष **श्री जगदीप धनखड़** ने 18 नवंबर 2022 को परिषद की 21वीं शासी निकाय और 20वीं शासी परिषद की बैठक की अध्यक्षता की।

विदेश मंत्री तथा भारतीय वैश्विक परिषद के उपाध्यक्ष **डॉ. एस. जयशंकर** एवं विदेश मामलों की संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष तथा परिषद के उपाध्यक्ष **पी पी चौधरी** ने भी इस बैठक में भाग लिया।

भारत-मध्य एशिया राजनयिक संबंधों की 30वीं वर्षगांठ मनाने के लिए, आईसीडब्ल्यूए ने 15 दिसंबर 2022 को "भारत-मध्य एशिया संबंधों की गतिकी: पैमाना और दायरा" (Dynamics of India-Central Asia Relations: Scale & Scope) पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री संजय वर्मा ने मुख्य भाषण दिया। भारत में कज़ाखस्तान के राजदूत महामहिम श्री नुरलान झलगास्बायेव, भारत में ताजिकिस्तान के राजदूत महामहिम श्री लुकमोन बोबोकालोनजोडा, किर्गिस्तान के सीडीए महामहिम श्री अज़मत सेदिबालिएव, भारत में उज़्बेकिस्तान के सीडीए महामहिम श्री अज़ीज़ बाराटोव और भारत में तुर्कमेनिस्तान के दूतावास के प्रतिनिधि श्री इस्गेंडर अतालियेव ने भी सम्मेलन को संबोधित किया।

ईरान इस्लामिक गणराज्य के विदेश मामलों के उप मंत्री तथा जेसीपीओए के शीर्ष वार्ताकार महामहिम डॉ. अली बघेरी कानी के साथ एक बैठक का आयोजन 24 नवंबर 2022 को किया गया।

आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक, राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने इंडोनेशिया के जकार्ता में 8-9 दिसंबर 2022 को काउंसिल फॉर सिक्यूरिटी कोऑपरेशन इन एशिया पैसिफिक (सीएससीएपी), पर जनरल कांफ्रेंस में एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

विषय-सूची

डॉ. एफ.आर. सिद्दीकी, वरिष्ठ शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए, द्वारा लिखित "चीन और अरब दुनिया: अतीत और वर्तमान" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 03 अक्टूबर 2022 4

"दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में चीन का बीआरआई: सहयोग, विरोधाभास और चिंताएं" (आईसीडब्ल्यूए प्रकाशन) पर "आईसीडब्ल्यूए पुस्तक विमर्श", 07 अक्टूबर 2022 4

भारत में वियतनाम के राजदूत महामहिम श्री गुयेन थान है ने महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए राजदूत विजय ठाकुर सिंह से मुलाकात की, 11 अक्टूबर 2022 5

डॉ. समथा मल्लेम्पति, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिकी: 2009 के बाद" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 11 अक्टूबर 2022 5

नरेश कुमार बीके, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "2008 से नेपाल के साथ चीन की भागीदारी" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 13 अक्टूबर 2022 6

डॉ. प्रज्ञा पांडे, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "चाइना एंड द साऊथ पैसिफिक: अनफोल्डिंग जियोपॉलिटिकल शिफ्ट्स इन द रीजन" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 18 अक्टूबर 2022 6

डॉ अन्वेषा घोष, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "अफगानिस्तान में संकट और तालिबान शासन" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 19 अक्टूबर 2022 7

"नए वैश्विक संदर्भ में अमेरिका, रूस और चीन के साथ आर्थिक संबंध" पर वियतनाम-एशिया पैसिफिक आर्थिक केंद्र के अध्यक्ष प्रो. डॉ. वो दाई लुओक के नेतृत्व वाले वियतनामी प्रतिनिधिमंडल तथा आईसीडब्ल्यूए के बीच संवाद, 20 अक्टूबर 2022 7

"अब्राहम समझौते और पश्चिम एशिया में उभरती राजनीतिक वास्तविकताओं" पर आईसीडब्ल्यूए पैनल विमर्श, 09 नवंबर 2022 8

डॉ. राहुल नाथ चौधरी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच संभावित एफटीए का आकलन" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 11 नवंबर 2022 9

डॉ. हिमानी पंत, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "रूस-चीन संबंध और एक बदलती विश्व व्यवस्था" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 14 नवंबर 2022 9

डॉ. स्तुति बनर्जी, वरिष्ठ शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए, और डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "अंडरस्टैंडिंग एसआईसीए: टुवार्ड्स बिल्डिंग अ स्ट्रांगर पार्टनरशिप" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 15 नवंबर 2022 10

8वां आईसीडब्ल्यूए-चाइनीज पीपुल्स इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स (सीपीआईएफए) संवाद, 16 नवंबर 2022 10

आईसीडब्ल्यूए के शासी निकाय की 21वीं बैठक और आईसीडब्ल्यूए की शासी परिषद की 20वीं बैठक, 18 नवंबर 2022 12

कोरिया गणराज्य की कोरियाई राष्ट्रीय राजनयिक अकादमी के चांसलर, डॉ. होंग ह्युनिक के नेतृत्व में कोरियाई प्रतिनिधिमंडल के साथ अनौपचारिक विमर्श, 24 नवंबर 2022 13

'एससीओ के संदर्भ में शांति व सुरक्षा को मजबूत करना: इस्लामी गणराज्य ईरान की दृष्टि' पर इस्लामी गणराज्य ईरान के विदेश मंत्रालय के विदेश उप मंत्री व जेसीपीओए (JCPOA) के शीर्ष वार्ताकार महामहिम डॉ. अली बघेरी कानी के साथ बंद कमरे में व्यक्तिगत रूप से संवाद, 24 नवंबर 2022 13

एशिया में सहभागिता और विश्वास निर्माण उपायों (सीआईसीए) पर थिंकटैंक फोरम में 10वां सम्मेलन "अशांति और परिवर्तन की अवधि में एशिया में सतत सुरक्षा: चुनौतियां और दृष्टि", 30 नवंबर 2022 14

सुश्री गुल्डेन कास्करबायेवा, पीएचडी उम्मीदवार, अंतर्राष्ट्रीय संबंध संकाय, एल.एन. गुमिल्योव यूरेशियन नेशनल यूनिवर्सिटी, अस्ताना, कज़ाखस्तान, आईसीडब्ल्यूए के प्रथम एससीओ रेजिडेंट स्कॉलर (SCO Resident Scholar), 01 दिसंबर 2022 15

एशिया पैसिफिक में सुरक्षा सहयोग परिषद (सीएससीएपी) की जनरल कांफ्रेंस, जकार्ता, इंडोनेशिया, 08-09 दिसंबर 2022 16

इंस्टिट्यूट फॉर स्ट्रेटेजी एंड पालिसी (आईएसपी), म्यांमार के संस्थापक सदस्य और कार्यकारी निदेशक, यू मिन ज़िन द्वारा "म्यांमार में विकास और क्षेत्रीय प्रतिक्रिया" पर संवाद, 13 दिसंबर 2022 17

भारत-मध्य एशिया राजनयिक संबंधों की 30वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में "भारत-मध्य एशिया संबंधों की गतिकी: पैमाना और दायरा" पर भारत-मध्य एशिया अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 15 दिसंबर 2022 17

डॉ. सुदीप कुमार, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "जापान-चीन विदेश-सुरक्षा संबंध" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 19 दिसंबर 2022 21

आईसीडब्ल्यूए और इंस्टीट्यूट फॉर फॉरेन पॉलिसी एंड स्ट्रैटेजिक स्टडीज, वियतनाम की डिप्लोमैटिक एकेडमी के बीच संवाद, 20 दिसंबर 2022 21

आउटरीच कार्यक्रम 22

प्रकाशन 24

इंडिया क्वार्टरली - संपादकीय 27

डॉ. एफ.आर. सिद्दीकी, वरिष्ठ शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "चीन और अरब दुनिया: अतीत और वर्तमान" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 3 अक्टूबर 2022

आईसीडब्ल्यूए ने 03 अक्टूबर 2022 को डॉ. फज्जुर रहमान सिद्दीकी, वरिष्ठ शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए, द्वारा लिखित 'चीन और अरब दुनिया' पर सप्रू हाउस पेपर विमर्श का आयोजन किया। इस विमर्श की अध्यक्षता ईरान में भारत के पूर्व राजदूत डी.पी. श्रीवास्तव ने की। एक अंतर्राष्ट्रीय स्वतंत्र पत्रकार डॉ. वायल अव्वाद, और आईडीएसए के रिसर्च फेलो डॉ. पी.के. प्रधान, चर्चाकर्ता थे। यह पत्र ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में चीन-अरब संबंधों की मुख्य रूपरेखाओं की पहचान करता है और यह पता लगाता है कि कैसे संबंधों के विभिन्न चरणों में अलग-अलग प्राथमिकताएं देखी गई हैं।

"दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में चीन का बीआरआई: सहयोग, विरोधाभास और चिंताएं" पुस्तक (आईसीडब्ल्यूए प्रकाशन) पर विमर्श, 07 अक्टूबर 2022

आईसीडब्ल्यूए ने 7 अक्टूबर 2022 को नई दिल्ली के सप्रू हाउस में डॉ. संजीव कुमार, वरिष्ठ शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा संपादित "दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में चीन का बीआरआई: सहयोग, विरोधाभास और चिंताएं" (आईसीडब्ल्यूए प्रकाशन) पर एक पुस्तक चर्चा का आयोजन किया। उद्घाटन भाषण महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए राजदूत विजय ठाकुर सिंह द्वारा दिया गया। पुस्तक चर्चा की अध्यक्षता चीन में भारत के पूर्व राजदूत और विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन, नई दिल्ली के प्रतिष्ठित फेलो राजदूत अशोक कांथा ने की जबकि समकालीन चीन अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल एस.एल. नरसिम्हन तथा जेएनयू, नई दिल्ली के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के डीन प्रो. श्रीकांत कोंडापल्ली और ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, सोनीपत, हरियाणा स्थित जिंदल स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स के डीन प्रो. श्रीराम चौलिया पैनलिस्ट के रूप में मौजूद रहे।

अपनी उद्घाटन टिप्पणी में, आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने कहा कि बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव्स (बीआरआई) परियोजनाओं का विश्लेषण चीन को समझने में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है- इसका व्यवहार, विस्तार और चीनी राज्य का कामकाज। अध्यक्ष, राजदूत अशोक कांथा ने रेखांकित किया कि यह वॉल्यूम प्रासंगिक इनपुट को एक साथ रखकर विभिन्न क्षेत्रीय

दृष्टिकोण प्रदान करता है और साथ ही बीआरआई की प्रकृति, इसके विरोधाभासों, चुनौतियों और पहल के संभावित प्रक्षेप पथ का अवलोकन प्रदान करता है। इस वॉल्यूम के संपादक डॉ. संजीव कुमार ने पुस्तक की संरचना को चित्रित करते हुए पुस्तक में प्रयुक्त तीन प्रमुख शब्दों- सहयोग, विरोधाभास और चिंताओं, का वर्णन किया।

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) पर एक व्यापक प्रकाशन लाने के लिए आईसीडब्ल्यूए की सराहना करते हुए, लेफ्टिनेंट जनरल एस.एल. नरसिम्हन ने उल्लेख किया कि पुस्तक पूरी दुनिया में चीनी वित्त पोषित भूमि-आधारित परियोजनाओं का एक बहुत अच्छा अवलोकन देती है। प्रो. श्रीकांत कोंडापल्ली ने आईसीडब्ल्यूए के योगदान की सराहना की और पुस्तक के महत्व पर प्रकाश डाला क्योंकि यह बीआरआई के बारे में चीनी आख्यान को चुनौती देती है। प्रो श्रीराम चौलिया ने कहा कि पुस्तक चीनी परियोजनाओं का वैश्विक सर्वेक्षण प्रदान करती है। यह एक भव्य वैश्विक मंच पर आर्थिक शासन कला का उपयोग करते हुए एक महान शक्ति के कामकाज की रुपरेखा भी प्रस्तुत करता है। भारतीय दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए और अधिक महत्वपूर्ण निर्णयों की आवश्यकता है।

भारत में वियतनाम के राजदूत महामहिम गुयेन थान है ने महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, राजदूत विजय ठाकुर सिंह से मुलाकात की, 11 अक्टूबर 2022

भारत में वियतनाम के राजदूत महामहिम गुयेन थान है ने आईसीडब्ल्यूए और वियतनाम में समकक्ष संस्थानों के बीच वर्तमान और भविष्य के सहयोग पर चर्चा करने के लिए आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक विजय ठाकुर सिंह से मुलाकात की। बैठक के दौरान आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी चर्चा की गई।

डॉ. समता मल्लेम्पति, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिकी: 2009 के बाद" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 11 अक्टूबर 2022

डॉ. समता मल्लेम्पति, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "भारत-श्रीलंका संबंधों में सुरक्षा गतिकी: 2009 के बाद" पर एक सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 11 अक्टूबर 2022 को आयोजित किया गया था। इसकी अध्यक्षता राजदूत अशोक कांथा द्वारा की गई थी जो श्रीलंका में पूर्व भारतीय उच्चायुक्त और विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन, नई दिल्ली के प्रतिष्ठित फेलो रहे हैं। डॉ. मयिलवागनन एम, एसोसिएट प्रोफेसर, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज और मलिंडा मीगोडा, रिसर्च एसोसिएट,

लक्ष्मण कादिरगमर इंस्टीट्यूट (एलकेआइ) इसके चर्चाकर्ता थे। पेपर ने तर्क दिया कि, 2009 के बाद से, भारत-श्रीलंका संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं और इसलिए, यह उन घरेलू और बाहरी कारकों पर ध्यान देता है जो युद्ध के बाद के वर्षों में भारत और श्रीलंका के बीच सुरक्षा की गतिकी को प्रभावित कर रहे हैं जैसे कि जातीय मुद्दा, सुलह, मछुआरों का मुद्दा, हिंद महासागर की शांति और सुरक्षा के प्रति दृष्टिकोण और बाहरी खिलाड़ियों की भूमिका।

नरेश कुमार बीके, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "2008 के बाद से नेपाल के साथ चीन की भागीदारी" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 13 अक्टूबर 2022

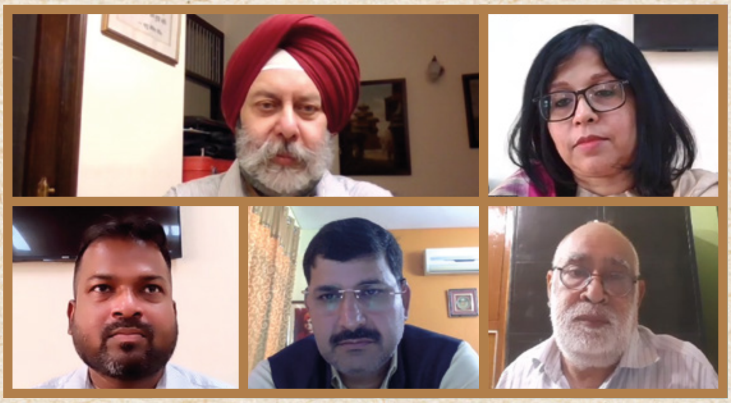

13 अक्टूबर 2022 को आईसीडब्ल्यूए के शोध अध्येता, नरेश कुमार बी.के. द्वारा लिखित "2008 के बाद से नेपाल के साथ चीन की भागीदारी" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श का आयोजन किया गया था। चर्चा की अध्यक्षता नेपाल में भारत के पूर्व राजदूत मंजीव सिंह पुरी ने की। प्रो. संजय भारद्वाज, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय और प्रो. शिव बहादुर सिंह, डीएवी पीजी कॉलेज, बीएचयू, वाराणसी इसके चर्चाकर्ता थे। यह नेपाल में बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य में ऊर्जा, संपर्क, व्यापार, सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव और बीआरआई के तहत सहयोग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में चीन के बढ़ते रणनीतिक प्रोफ़ाइल का आकलन करता है।

डॉ. प्रज्ञा पांडे, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "चाइना एंड द साऊथ पैसिफिक: अनफोल्डिंग जियोपॉलिटिकल शिफ्ट्स इन द रीजन" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 18 अक्टूबर 2022

डॉ. प्रज्ञा पांडे, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "चाइना एंड द साऊथ पैसिफिक: अनफोल्डिंग जियोपॉलिटिकल शिफ्ट्स इन द रीजन" पर एक सप्रू हाउस पेपर विमर्श का आयोजन 18 अक्टूबर 2022 को आईसीडब्ल्यूए द्वारा किया गया था। इस चर्चा की अध्यक्षता प्रोफेसर संजय चतुर्वेदी ने की, जो दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सामाजिक विज्ञान संकाय, अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग के प्रोफेसर और डीन हैं। वरिष्ठ अध्येता, नेशनल मैरीटाइम फाउंडेशन, नई दिल्ली के कैप्टन

सरबजीत सिंह परमार, और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रोफेसर और कार्यवाहक निदेशक, ग्रिफिथ एशिया इंस्टीट्यूट, ब्रिस्बेन के प्रोफेसर इयान हॉल इसके चर्चाकर्ता थे। पेपर का प्राथमिक उद्देश्य चीन की बढ़ती कूटनीतिक और रणनीतिक उपस्थिति के आलोक में दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में भू-राजनीतिक बदलावों का मूल्यांकन करना है। इसका उद्देश्य प्रशांत द्वीप देशों (पीआईसी) के साथ जुड़ाव में प्रमुख खिलाड़ियों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना है।

डॉ अन्वेषा घोष, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "अफगानिस्तान में संकट और तालिबान शासन" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 19 अक्टूबर 2022

डॉ अन्वेषा घोष, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "अफगानिस्तान में संकट और तालिबान शासन" पर सप्रू हाउस पेपर विमर्श का आयोजन आईसीडब्ल्यूए द्वारा 19 अक्टूबर 2022 को किया गया था। इस चर्चा की अध्यक्षता प्रोफेसर और जीन मोनेट चेयर, सेंटर फॉर यूरोपियन स्टडीज, जवाहर लाल नेहरु यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर गुलशन सचदेवा ने की थी। डॉ. विशाल चंद्र, रिसर्च फेलो, एमपी-आईडीएसए और प्रो. धनंजय त्रिपाठी, एसोसिएट प्रोफेसर, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय चर्चाकर्ता थे। यह पेपर उन प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रमों पर चर्चा करता है जिसके कारण अगस्त 2021 में अफ़ग़ान गणराज्य का पतन हुआ और इस संदर्भ में, यह अफ़ग़ानिस्तान में पहले के शासन परिवर्तनों को भी देखता है और वर्तमान में अफ़ग़ानिस्तान पर शासन करने वाले तालिबान शासन की बात कर समापन की ओर बढ़ता है।

"नए वैश्विक संदर्भ में अमेरिका, रूस और चीन के साथ आर्थिक संबंध" पर वियतनाम-एशिया पैसिफिक इकोनॉमिक सेंटर के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ वो दाई लुओक के नेतृत्व में वियतनामी प्रतिनिधिमंडल तथा आईसीडब्ल्यूए के बीच संवाद, 20 अक्टूबर 2022

वियतनाम-एशिया पैसिफिक इकोनॉमिक सेंटर के अध्यक्ष प्रो. डॉ. वो दाई लुओक के नेतृत्व में वियतनाम के पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 20 अक्टूबर 2022 को "नए वैश्विक संदर्भ में अमेरिका, रूस और चीन के साथ आर्थिक संबंध" पर आईसीडब्ल्यूए के शोध संकाय के साथ बातचीत के लिए आईसीडब्ल्यूए का दौरा किया। वियतनामी प्रतिनिधिमंडल में आर्थिक सहयोग विकास के लिए वियतनाम-आसियान एसोसिएशन के एसोसिएट प्रो बुई टाट थांग, वियतनाम

इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक्स के वाइस जनरल डायरेक्टर डॉ. फाम अन्ह तुआन, इंस्टीट्यूट ऑफ वर्ल्ड इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिक्स के एमए वो है मिन्ह, और वियतनाम-एशिया प्रशांत आर्थिक केंद्र के एमए ट्रान कैम ट्रांग शामिल थे। आईसीडब्ल्यूए के अनुसंधान संकाय में डॉ. निवेदिता रे, निदेशक (अनुसंधान), डॉ. संजीव कुमार, सीनियर रिसर्च फेलो, डॉ. स्तुति बनर्जी, सीनियर रिसर्च फेलो, डॉ. हिमानी पंत, रिसर्च फेलो, डॉ. तेशु सिंह, रिसर्च फेलो, और डॉ. तेमजेनमेरेन एओ, रिसर्च फेलो शामिल थे।

बातचीत यूक्रेनी संघर्ष के साथ-साथ चल रहे भू-राजनीतिक बदलावों पर केंद्रित थी। ऐसे समय में जब दुनिया अभी भी कोविड-19 महामारी से उबर ही रही थी, चर्चा में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे यह स्थिति उच्च मुद्रास्फीति, ऊर्जा संकट और कुछ देशों को वैश्विक मंदी की ओर ले जाने की संभावनाओं को जन्म दे रही है। चर्चा में उन क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया जहां भारत और वियतनाम के बीच अधिक सहयोग और सहभागिता हो सकती है जिसमें आईटी, नवीकरणीय ऊर्जा, विशेष रूप से पवन, फार्मा, अनुसंधान एवं विकास, पर्यटन और कृषि शामिल हैं। चल रहे भू-राजनीतिक बदलाव भारत और वियतनाम दोनों के लिए महान शक्तियों के साथ उनके संबंधों के संदर्भ में चुनौतियां पेश करते हैं, लेकिन साथ ही द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और त्रिपक्षीय सहयोग की खोज के मामले में अवसर भी प्रदान करते हैं।

"अब्राहम समझौते और पश्चिम एशिया में उभरती राजनीतिक वास्तविकताएं" पर आईसीडब्ल्यूए पैनल विमर्श, 09 नवंबर 2022

आईसीडब्ल्यूए ने 09 नवंबर 2022 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में अब्राहम समझौते और पश्चिम एशिया में उभरती राजनीतिक वास्तविकताओं पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। चर्चा की अध्यक्षता जॉर्डन, लीबिया और माल्टा के पूर्व राजदूत राजदूत अनिल त्रिगुणायत ने की। उन्होंने टिप्पणी की कि अब्राहम समझौते एक सकारात्मक कदम हैं और उन्हें अमेरिका द्वारा इजरायल को अरब देशों के दायरे में लाने के लिए शुरू किया गया था और यह प्रयास काफी हद तक सफल रहा है। इस समझौते से संयुक्त अरब अमीरात और इज़राइल को प्रमुख रूप से लाभ हुआ है; द्विपक्षीय व्यापार 900 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया और दोनों देशों ने जून 2022 में एक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए। मोरक्को और सूडान ने सितंबर 2020 में समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद से द्विपक्षीय संबंधों की वांछित गति को बनाए रखा है। I2U2 और लेबनान-इज़राइल समुद्री सौदा अब्राहम समझौते के सकारात्मक पहल के परिणाम हैं। पश्चिम एशिया एक बड़े मंथन के दौर से गुजर रहा है और इस क्षेत्र के साथ भारत के संबंध लेन-देन से बढ़ते हुए सही मायने में रणनीतिक रूप तक विकसित हुए हैं।

जेएनयू के पूर्व रेक्टर प्रोफेसर चिंतामणि महापात्रा ने पाया कि कैंप डेविड समझौते (1978) और ओस्लो शांति समझौते (1993) सहित अरब-इज़राइल शांति प्रक्रियाओं के पहले के प्रयासों के विपरीत अब्राहम समझौते सफल रहे हैं। हस्ताक्षरकर्ता देशों के बीच संयुक्त नौसैनिक अभ्यास के संचालन और हथियारों के सौदे पर हस्ताक्षर के द्वारा अब्राहम समझौते की सफलता स्पष्ट दिखती है। सेंटर फॉर वेस्ट एशियन स्टडीज, जेएनयू के प्रोफेसर बंशीधर प्रधान ने कहा कि अब्राहम समझौते ने इजरायल-फिलीस्तीन संघर्ष के इतिहास में एक नए चरण को चिह्नित किया। वे इसमें शामिल अभिनेताओं की धारणाओं और रुचियों के सम्मिलन का परिणाम हैं। अब्राहम समझौते में फिलीस्तीन के मुद्दे का उल्लेख नहीं किया गया है, जिसे संबोधित करने की आवश्यकता है। वरिष्ठ अंतर्राष्ट्रीय स्वतंत्र पत्रकार डॉ. वायल अव्वाद ने कहा कि अब्राहम समझौते का उद्देश्य पश्चिम एशियाई क्षेत्र में इज़राइल को समायोजित करना था और यह एक हद तक सफल भी हुआ है। इजरायल और फिलीस्तीन के सह-अस्तित्व के सिद्धांत का महत्व कम नहीं होना चाहिए।

चर्चा में, प्रतिभागियों ने पाया कि अब्राहम समझौते की सफलता का मूल्यांकन करने में लोगों की धारणा एक महत्वपूर्ण विचार है। यदि

राजनीति परिणाम देने में विफल रहती है, तो आर्थिक विकास और साझेदारी को नवीन सोच के माध्यम से एक मौका दिया जाना चाहिए। अब्राहम समझौते की सफलता और फ़िलीस्तीनियों के अधिकारों को एक साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए। अब्राहम समझौते को काम करने देना सभी के हित में है। ईरान को भी जगह देने की जरूरत है; एक कोशिश की जानी चाहिए। अरब नेताओं को घरेलू स्तर पर ताकत देना जरूरी है; केवल मजबूत नेता ही शांति स्थापित कर सकते हैं। भारत ने अब्राहम समझौते का स्वागत किया जो इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता लाता है। भारत इजरायल के साथ-साथ अरब दुनिया और ईरान के साथ घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों के साथ एक अनूठी स्थिति में है।

डॉ राहुल नाथ चौधरी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच संभावित एफटीए का आकलन" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 11 नवंबर 2022

डॉ. राहुल नाथ चौधरी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच संभावित एफटीए का आकलन" पर सप्रू हाउस पेपर चर्चा 11 नवंबर 22 को आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता क्रॉफोर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी, द ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के अर्थशास्त्र के एमेरिटस प्रोफेसर डॉ. प्रेमा-चंद्र अथुकोरला ने की। बिजनेस इकोनॉमिक्स विभाग, एमएस यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, वड़ोदरा, गुजरात के आरबीआई चेयर प्रोफेसर डॉ. डी. एन. नायक और मानविकी सामाजिक विज्ञान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनंदन घोष चर्चाकर्ता थे।

डॉ हिमानी पंत, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "रूस-चीन संबंध और एक बदलती विश्व व्यवस्था" पर सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) विमर्श, 14 नवंबर 2022

डॉ. हिमानी पंत, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "रूस-चीन संबंध और एक बदलती विश्व व्यवस्था" पर सप्रू हाउस पेपर विमर्श 14 नवंबर 2022 को आयोजित की गई थी। चर्चा की अध्यक्षता रूस में भारत के पूर्व राजदूत राजदूत वेंकटेश वर्मा द्वारा की गई थी। स्कूल ऑफ कॉन्फ्लिक्ट एंड सिक्योरिटी स्टडीज, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के प्रोफेसर और डीन प्रो. सुबा चंद्रन, और सीनियर फेलो, गेटवे हाउस श्री अमित भंडारी चर्चाकर्ता थे। यह पेपर रूस-चीन संबंधों में हाल के रुझानों की जांच करता है जिसमें चीन के प्रति रूस की विकसित होती नीति पर जोर दिया गया है। यह 1990 के दशक से रूस-चीन संबंधों के विकास का पता लगाता है और प्रतिस्पर्धा व सहयोग के प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डालता है।

डॉ. स्तुति बनर्जी, वरिष्ठ शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए और डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "अंडरस्टैंडिंग एसआईसीए: टुवर्ड्स बिल्डिंग ए स्ट्रॉन्ग पार्टनरशिप" पर सप्रू हाउस पेपर (SHP) विमर्श, 15 नवंबर 2022

15 नवंबर 2022 को डॉ. स्तुति बनर्जी, वरिष्ठ शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए और डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "अंडरस्टैंडिंग एसआईसीए: टूवर्ड्स बिल्डिंग ए स्ट्रॉन्ग पार्टनरशिप" पर आईसीडब्ल्यूए द्वारा एक सप्रू हाउस पेपर विमर्श का आयोजन किया गया था। इसकी अध्यक्षता ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी (JGU), सोनीपत के जिंदल स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (JSIA) के प्रोफेसर और डीन डॉ. श्रीराम चौलिया द्वारा की गई थी। अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, गोवा विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. अपराजिता गंगोपाध्याय और कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका व लैटिन अमेरिकी अध्ययन केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली, की सहायक प्रोफेसर डॉ. अपराजिता कश्यप चर्चाकर्ता थीं। पेपर ने इस कथन की पड़ताल की कि जैसे-जैसे भारत इस क्षेत्र में पारंपरिक लैटिन अमेरिकी भागीदारों से परे अपना ध्यान केंद्रित करना शुरू करता है, मध्य अमेरिकी राज्यों की आर्थिक और रणनीतिक क्षमता भारतीय नीति निर्माताओं के बीच प्रमुखता प्राप्त कर रही है।

8वां आईसीडब्ल्यूए-चाइनीज पीपुल्स इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स (सीपीआईएफए) संवाद, 16 नवंबर 2022

8वां आईसीडब्ल्यूए-चाइनीज पीपुल्स इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स (सीपीआईएफए) संवाद 16 नवंबर 2022 को वर्चुअल प्रारूप में आयोजित किया गया था। दोनों संस्थाएं 2005 से समझौता ज्ञापन भागीदार हैं। दोनों पक्षों के लगभग 25 प्रतिनिधियों ने संवाद में भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए और आईसीडब्ल्यूए प्रतिनिधिमंडल प्रमुख राजदूत विजय ठाकुर सिंह; तथा उपाध्यक्ष, सीपीआईएफए और सीपीआईएफए प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख राजदूत ली जी ने अपनी बात रखी। भारतीय प्रतिनिधिमंडल में राजदूत नलिन सूरी, प्रतिष्ठित फेलो, दिल्ली पॉलिसी ग्रुप (डीपीजी), नई दिल्ली, चीन में पूर्व राजदूत व ब्रिटेन में पूर्व उच्चायुक्त; राजदूत अशोक के. कांथा, प्रतिष्ठित फेलो, विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन, नई दिल्ली, चीन में पूर्व राजदूत और श्रीलंका में पूर्व उच्चायुक्त; राजदूत टी.एस. तिरुमूर्ति, संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि; राजदूत गौतम बंबावाले, प्रतिष्ठित प्रोफेसर, सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, पुणे, चीन और भूटान के पूर्व राजदूत, पाकिस्तान के पूर्व उच्चायुक्त; श्री जयदेव रानाडे, अध्यक्ष, सेंटर फॉर चाइना एनालिसिस एंड स्ट्रैटेजी; प्रो. मधु भल्ला, संपादक, इंडिया क्वार्टरली; प्रो. श्रीकांत कोंडापल्ली, डीन, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली; कोमोडोर गोपाल सूरी, सीनियर रिसर्च फेलो, सेंटर फॉर कंटेम्पररी चाइना स्टडीज, नई दिल्ली; डॉ. संजीव कुमार, सीनियर रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए और डॉ. तेशु सिंह, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए शामिल थे।

चीनी प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे- भारत, सिंगापुर और ब्रुनेई में पूर्व राजदूत राजदूत वेई वेई; चाइना इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के उपाध्यक्ष श्री लियू किंग; दक्षिण एशिया अध्ययन संस्थान, चीन समकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान (CICIR) के निदेशक डॉ. हू शिशेंग; चीनी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक सहयोग अकादमी, वाणिज्य मंत्रालय (MOFCOM) के क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग केंद्र के महानिदेशक डॉ. झांग जियानपिंग; डॉ. वांग जू, कार्यकारी उप निदेशक, दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र, पेकिंग विश्वविद्यालय; प्रो. लिन मिनवांग, उप निदेशक, दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र, फुदान विश्वविद्यालय; प्रो. मा शियाओलिन, वरिष्ठ प्रोफेसर और निदेशक, इंस्टिट्यूट फॉर स्टडीज ऑन मेडिटेरेनियन रिम (ISMR), झेजियांग इंटरनेशनल स्टडीज यूनिवर्सिटी (ZISU); श्री ये हैलिन, उप प्रमुख, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल स्ट्रैटेजी (NIIS), चाइनीज एकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज (CASS); डॉ. लियू जोंग्यी, चीन के महासचिव और दक्षिण एशिया सहयोग अनुसंधान केंद्र, शंघाई इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल स्टडीज (SIIS); और डॉ. वू होंगयिंग, निदेशक, ब्रिक्स और G20 अध्ययन केंद्र, CICIR।

दोनों देशों के द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों से संबंधित कई प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की गई। संवाद का पहला सत्र "वैश्विक और क्षेत्रीय विकास: भारत और चीन के विचार" पर केंद्रित था। संवाद के

दूसरे सत्र में "पारस्परिक लाभ के लिए भारत और चीन के बीच सहयोग: आर्थिक, सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के आदान-प्रदान" पर चर्चा हुई। संवाद के तीसरे सत्र में "सुधारित बहुपक्षवाद और वास्तविक बहुपक्षवाद: समानताएं और विरोधाभास" पर विचार-विमर्श किया गया।

आईसीडब्ल्यूए की शासी निकाय की 21वीं बैठक और आईसीडब्ल्यूए की 20वीं शासी परिषद की बैठक, 18 नवंबर 2022

कोरिया गणराज्य की कोरियाई राष्ट्रीय राजनयिक अकादमी के चांसलर, डॉ. होंग ह्युनिक के नेतृत्व में कोरियाई प्रतिनिधिमंडल के साथ अनौपचारिक विमर्श, 24 नवंबर 2022

कोरिया गणराज्य की कोरियाई राष्ट्रीय राजनयिक अकादमी (KNDA) के चांसलर डॉ. होंग ह्युनिक के नेतृत्व में 3 सदस्यीय कोरियाई प्रतिनिधिमंडल ने 24 नवंबर 2022 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक और आईसीडब्ल्यूए की रिसर्च फैकल्टी राजदूत विजय ठाकुर सिंह के साथ बातचीत की। केएनडीए (KNDA) के चांसलर डॉ. होंग ह्युनिक, डॉ. चो वोंगी और डॉ. चो वोंड्यूक कोरियाई प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे। दोनों पक्षों ने भारत-दक्षिण कोरिया द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने पर चर्चा की और इंडो-पैसिफिक पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

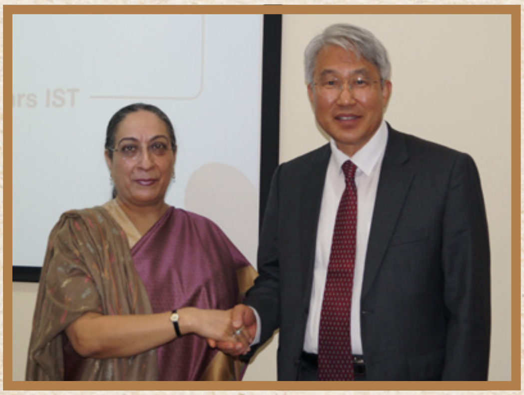

'एससीओ के संदर्भ में शांति व सुरक्षा को मजबूत करना: इस्लामी गणराज्य ईरान की दृष्टि' पर इस्लामी गणराज्य ईरान के विदेश मंत्रालय के उप मंत्री व जेसीपीओए (JCPOA) के शीर्ष वार्ताकार महामहिम डॉ. अली बघेरी कानी के साथ संवाद, 24 नवंबर 2022

24 नवंबर 2022 को उप विदेश मंत्री, ईरान व जेसीपीओए के शीर्ष वार्ताकार महामहिम डॉ. बघेरी कानी, जिन्होंने 'एससीओ के संदर्भ में शांति और सुरक्षा को मजबूत करना' विषय पर बात की थी, के साथ सप्रू हाउस में एक बंद कमरे में बातचीत हुई। वार्ता की अध्यक्षता आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने की। बातचीत में ईरान में भारत के पूर्व राजदूतों और अन्य विद्वानों ने भाग लिया।

चर्चा एक सदस्य देश के रूप में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) में ईरान के प्रवेश पर केंद्रित थी। इस बात पर जोर दिया गया कि ईरान एससीओ में शामिल हो गया है क्योंकि बहुपक्षवाद महत्वपूर्ण है और एससीओ बहुराष्ट्रीय क्षेत्र में एक नया पैटर्न बनाने के उपकरणों में से एक है। (ईरान ने बहुपक्षवाद को बढ़ावा देने के लिए ब्रिक्स में शामिल होने के लिए भी आवेदन किया है।) एससीओ में, ईरान का फोकस मध्य एशिया में क्षमता निर्माण पर होगा ताकि क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ाया जा सके। यह क्षेत्र में पारंपरिक के साथ-साथ गैर-पारंपरिक

सुरक्षा चुनौतियों से निपटने में मदद करेगा। भारत एससीओ में ईरान के प्रवेश का स्वागत करता है और उम्मीद करता है कि इस विकास के साथ क्षेत्र में कनेक्टिविटी परियोजनाओं को आवश्यक गति और तेज़ी मिलेगी। एससीओ क्षेत्र में शांति और सुरक्षा का भारत और क्षेत्र के लिए अत्यधिक महत्व है और विशेष रूप से अफगानिस्तान में हाल के घटनाक्रमों की पृष्ठभूमि में इस संबंध में एससीओ सदस्यों की ओर से एक समन्वित प्रयास होना चाहिए।

एशिया में सहभागिता और विश्वास निर्माण उपायों (सीआईसीए) पर थिंकटैंक फोरम में 10वां सम्मेलन "अशांति और परिवर्तन के समय में एशिया में सतत सुरक्षा: चुनौतियां और दृष्टि", 30 नवंबर 2022

एशिया थिंक टैंक फोरम में सहभागिता और विश्वास निर्माण उपायों पर 10वां सम्मेलन (CICA) 30 नवंबर से 1 दिसंबर 2022 तक आयोजित किया गया था। फोरम का विषय था "अशांति और परिवर्तन की अवधि में एशिया में सतत सुरक्षा: चुनौतियां और दृष्टि"। फोरम के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में शंघाई इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल स्टडीज (SIIS), शंघाई, चीन ने हाइब्रिड मोड में इस कार्यक्रम की मेजबानी की। भारत से प्रतिभागी फोरम में ऑनलाइन शामिल हुए। उद्घाटन और समापन सत्रों के अलावा, फोरम में एशिया में सतत सुरक्षा के लिए क्षमता निर्माण पर तीन शैक्षणिक सत्र शामिल थे: खाद्य सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा, एशिया में सतत सुरक्षा के लिए क्षमता निर्माण: परिवर्तन और कनेक्टिविटी, तथा सीआईसीए के 30 साल: उपलब्धियां, चुनौतियां और संभावनाएं।

तीन आईसीडब्ल्यूए विशेषज्ञों ने तीनों सत्रों में भाग लिया। श्री सिराज हुसैन, पूर्व कृषि सचिव, भारत सरकार और प्रवर्तक निदेशक, आर्कस पॉलिसी रिसर्च (एपीआर), ने सत्र I में "एशिया की खाद्य सुरक्षा की चुनौतियां" पर बात की। डॉ. अरुणाभ घोष, संस्थापक-सीईओ, ऊर्जा,पर्यावरण और जल परिषद (CEEW), नई दिल्ली, ने सत्र II में "एशिया में सतत सुरक्षा के लिए क्षमता निर्माण: हरित परिवर्तन और कनेक्टिविटी" पर बात की। आईसीडब्ल्यूए के सीनियर रिसर्च फेलो डॉ. अतहर जफर ने "सीआईसीए के परिवर्तन: संभावनाओं और चुनौतियों पर एक परिप्रेक्ष्य" पर अपनी प्रस्तुति दी।

प्रतिभागियों ने विशेष रूप से एशिया में खाद्य सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय परिवहन को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों पर चर्चा की। बढ़ती वैश्विक जनसंख्या, भू-राजनीतिक मुद्दों और कोविड-19 के प्रभाव के कारण खाद्य सुरक्षा ने एक महत्वपूर्ण आयाम हासिल कर लिया है। विभिन्न क्षेत्रों में सीआईसीए सदस्यों के बीच सहयोग, ज्ञान और अनुभव साझा करने का सुझाव दिया गया, विशेष रूप से सतत विकास के लिए। वक्ताओं ने यह भी उल्लेख किया कि सीआईसीए थिंक टैंक फोरम एशिया के महत्वपूर्ण क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा और सहयोग करने के लिए एक प्रमुख मंच बन गया है।

सुश्री गुल्डेन कास्करबायेवा, पीएचडी उम्मीदवार, अंतर्राष्ट्रीय संबंध संकाय, एल.एन. गुमिल्योव यूरेशियन नेशनल यूनिवर्सिटी, अस्ताना, कजाकिस्तान, आईसीडब्ल्यूए के प्रथम एससीओ रेजिडेंट स्कॉलर (SCO Resident Scholar), 01 दिसंबर 2022

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) (2022-2023) की भारत की अध्यक्षता के वर्ष में, आईसीडब्ल्यूए दिसंबर 2022 से जून 2023 तक विदेश मंत्रालय के सहयोग से एससीओ रेजिडेंट शोधकर्ता कार्यक्रम की मेजबानी कर रहा है। सात महीनों में, प्रत्येक एससीओ सदस्य देश (रूसी वर्णमाला क्रम से एससीओ अभ्यास के बाद: कज़ाखस्तान-दिसंबर '2022, चीन-जनवरी 2023, किर्गिस्तान-फरवरी 2023, पाकिस्तान-मार्च 2023, रूस-अप्रैल 2023, ताजिकिस्तान-मई 2023 और उज्बेकिस्तान-जून 2023) से एक नामित युवा शोधकर्ता एक महीने की अवधि के लिए आईसीडब्ल्यूए के साथ रहेंगे। कार्यक्रम में एससीओ स्कॉलर की बैंगलोर, चेन्नई और पांडिचेरी की यात्रा का एक सप्ताह का मॉड्यूल शामिल है, जिसे आईसीडब्ल्यूए द्वारा अपने एमओयू पार्टनर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज (एनआईएएस), बैंगलोर के सहयोग से समन्वित किया जा रहा है।

दिसंबर 2022 के महीने में, आईसीडब्ल्यूए ने कजाकिस्तान के एक विद्वान की मेजबानी की: सुश्री गुल्डन कास्करबायेवा, पीएचडी उम्मीदवार, अंतर्राष्ट्रीय संबंध संकाय, एल.एन. गुमीलोव यूरेशियन नेशनल यूनिवर्सिटी, अस्ताना, कजाकिस्तान; और कजाकिस्तान गणराज्य के विदेश मामलों के मंत्रालय के तहत विदेश नीति अनुसंधान संस्थान के विश्लेषण और पूर्वानुमान समूह के विशेषज्ञ। उन्होंने ओ. पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, सोनीपत; मनोहर पर्रिकर इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस (एमपी-आईडीएसए), नई दिल्ली और विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस), नई दिल्ली सहित अग्रणी थिंक टैंक और अकादमी संस्थाओं के साथ बातचीत की।

एशिया पैसिफिक में सुरक्षा सहयोग परिषद (सीएससीएपी) की जनरल कांफ्रेंस, जकार्ता, इंडोनेशिया, 08-09 दिसंबर 2022

आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक और सीएससीएपी, भारत की अध्यक्ष राजदूत विजय ठाकुर सिंह, ने 08-09 दिसंबर 2022 को आसियान सचिवालय, जकार्ता, इंडोनेशिया में आयोजित एशिया पैसिफिक में सुरक्षा सहयोग परिषद के 13वें जनरल कांफ्रेंस (सीएससीएपी) में 3 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक और सीएससीएपी, भारत की अध्यक्ष राजदूत विजय ठाकुर सिंह, ने 09 दिसंबर 2022 को आयोजित जनरल कांफ्रेंस के "इंडो-पैसिफिक पर आसियान आउटलुक की संभावना" शीर्षक वाले पैनल में मुख्य भाषण दिया। निरस्त्रीकरण सम्मेलन (जिनेवा), स्पेन और रूस के पूर्व भारतीय राजदूत डी. बी. वेंकटेश वर्मा ने 08 दिसंबर 2022 को आयोजित जनरल कांफ्रेंस के "आसियान केंद्रीयता और क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियां" शीर्षक वाले पैनल में एक प्रस्तुति दी।

सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर विचार-विमर्श किया गया - महान शक्ति प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धी क्षेत्रीय व्यवस्था, आसियान केंद्रीयता और क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियां, आर्थिक सुरक्षा, वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग: महामारी से सबक, यूक्रेन में युद्ध का इंडो-पैसिफिक क्षेत्र पर प्रभाव, इंडो-पैसिफिक पर आसियान आउटलुक की संभावना।

ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, भारत, इंडोनेशिया, जापान, न्यूजीलैंड, रूसी संघ, सिंगापुर, थाईलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका और वियतनाम सहित सीएससीएपी सदस्य देशों के विशेषज्ञों ने जनरल कांफ्रेंस में भाग लिया।

इंस्टिट्यूट फॉर स्ट्रेटेजी एंड पालिसी (आईएसपी), म्यांमार के संस्थापक सदस्य और कार्यकारी निदेशक, यू मिन ज़िन द्वारा "म्यांमार में विकास और क्षेत्रीय प्रतिक्रिया" पर संवाद, 13 दिसंबर 2022

आईसीडब्ल्यूए द्वारा 13 दिसंबर 2022 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में इंस्टिट्यूट फॉर स्ट्रेटेजी एंड पालिसी (आईएसपी) म्यांमार के संस्थापक सदस्य और कार्यकारी निदेशक, यू मिन ज़िन द्वारा "म्यांमार में विकास और क्षेत्रीय प्रतिक्रिया" पर बातचीत का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए राजदूत विजय ठाकुर सिंह द्वारा की गई थी। चर्चा चैथम हाउस के नियमों के तहत हुई।

भारत-मध्य एशिया राजनयिक संबंधों की 30वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में "भारत-मध्य एशिया संबंधों की गतिकी: पैमाना और दायरा" पर भारत-मध्य एशिया अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 15 दिसंबर 2022

भारत-मध्य एशिया राजनयिक संबंधों की 30वीं वर्षगांठ मनाने के लिए, आईसीडब्ल्यूए ने 15 दिसंबर 2022 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में "भारत-मध्य एशिया संबंधों की गतिकी: पैमाना और दायरा" पर एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की। सम्मेलन में मध्य एशियाई गणराज्यों के राजदूतों/मामलों के प्रभारी और मध्य एशियाई देशों और भारत के विद्वानों तथा पूर्व राजनयिकों ने व्यक्तिगत रूप से भागीदारी की। दिल्ली में राजनयिक कोर के सदस्य और अकादमिक व रणनीतिक समुदाय ने भी सम्मेलन में भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में, आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने कहा कि मध्य एशियाई देशों के साथ भारत के संबंधों के 30 साल दोस्ती और सहयोग की एक महत्वपूर्ण यात्रा रही है। भारत क्षेत्र के सभी पांच देशों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने वाले पहले देशों में से एक था। समय के साथ, ये संबंध क्षेत्र के विभिन्न देशों के साथ स्थायी रणनीतिक साझेदारी में विकसित हुए हैं। उन्होंने रेखांकित किया कि भारत और मध्य एशियाई देशों के बीच सम्मिलन के बढ़ते क्षेत्रों में क्षेत्रीय संपर्क, क्षेत्रीय सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और लोगों से लोगों के संपर्क शामिल हैं।

अपने मुख्य भाषण में, विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली में सचिव (पश्चिम) राजदूत संजय वर्मा ने विस्तार से बताया कि पिछले तीन दशकों में, भारत ने मुख्य रूप से द्विपक्षीय मार्ग के ज़रिये मध्य एशिया के साथ काम किया है। आज, इस भागीदारी को परामर्श के 'सीए 5 प्लस' तंत्र से लाभ मिल रहा है, जो 2019 में विदेश मंत्रियों के स्तर पर शुरू हुआ था, और अब इसे एक शिखर सम्मेलन के स्तर तक बढ़ा दिया गया है, जिसके तहत पहला भारत-मध्य एशियाई शिखर सम्मेलन जनवरी 2022 में आयोजित किया गया था। पैमाने और दायरे के संदर्भ में, भारत और मध्य एशियाई देशों को हमारे समय की तेजी से बदलती वास्तविकताओं द्वारा बताई गई पुनर्कल्पना की आवश्यकता थी। भारत-मध्य एशिया संबंधों के अवसर और चुनौतियां परस्पर लाभ के लिए बदल सकते हैं और अवश्य ही बदलने चाहिए। मध्य एशिया, रणनीतिक रूप से यूरेशियन लैंडमास के केंद्र में स्थित है, भारत से दूर का क्षेत्र नहीं है, यह भारत के 'विस्तारित पड़ोस' का एक हिस्सा है।

उद्घाटन सत्र को कज़ाखस्तान गणराज्य के राजदूत श्री नुरलान झालगास्बायेव; भारत में ताजिकिस्तान गणराज्य के राजदूत श्री लुकमोन बोबोकालोंज़ोडा; भारत में किर्गिस्तान गणराज्य के Cd'A श्री अज़मत सेदिबालिएव; भारत में उज़्बेकिस्तान गणराज्य के Cd'A श्री अज़ीज़ बाराटोव और भारत में तुर्कमेनिस्तान गणराज्य के दूतावास के प्रतिनिधि श्री इस्गेंडर अतालियेव ने भी संबोधित किया। उन्होंने भारत और क्षेत्र के बीच कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय सुरक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में अधिक सहयोग पर जोर दिया।

'भारत-मध्य एशिया सुरक्षा और सामरिक हितों' पर पहले सत्र की अध्यक्षता विदेश मंत्रालय में पूर्व सचिव (पश्चिम), और उज्बेकिस्तान में भारत के पूर्व राजदूत राजदूत गीतेश सरमा ने की। सत्र के वक्ताओं में शामिल थे- प्रो. स्वेतलाना कोझीरोवा, प्रोफेसर, सेंटर फॉर चाइनीज एंड एशियन स्टडीज, इंटरनेशनल साइंस कॉम्प्लेक्स "अस्ताना", अस्ताना, कज़ाखस्तान; श्री एल्डोर तुल्याकोव, कार्यकारी निदेशक, विकास रणनीति केंद्र, ताशकंद, उज्बेकिस्तान; डॉ. सैहोमिद शारिपोव, ताजिकिस्तान गणराज्य, दुशांबे, ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति के अधीन सामरिक अनुसंधान केंद्र की आंतरिक नीति के विश्लेषण और पूर्वानुमान विभाग के प्रमुख; और डॉ. राजर्षि रॉय, एसोसिएट फेलो, मनोहर पर्रिकर इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, नई दिल्ली।

पहले सत्र में मध्य एशिया की सुरक्षा और रणनीतिक हितों, क्षेत्रीय भू-राजनीति और क्षेत्रीय सुरक्षा से संबंधित चुनौतियों और उग्रवाद, आतंकवाद, नशीले पदार्थों की तस्करी और हथियारों की तस्करी से निपटने की आवश्यकता पर चर्चा हुई। मध्य एशियाई क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियां राजनीतिक स्थिरता, सामाजिक और आर्थिक विकास, आंतरिक सुरक्षा खतरों और अबाधित परिवहन से संबंधित हैं। आधुनिक खतरों और चुनौतियों से निपटने के लिए सभी मध्य एशियाई राज्यों की आकांक्षाओं को मजबूत करने के लिए प्रभावी तंत्र स्थापित करना महत्वपूर्ण है। पैनलिस्टों ने रूस-यूक्रेन संकट और अफगानिस्तान पर बात की, जो इस क्षेत्र की मुख्य बाहरी चिंता बनी हुई है। प्रतिभागियों ने

इस बात पर प्रकाश डाला कि मध्य एशिया में भू-राजनीतिक स्थिति भारत और चीन जैसे नए वैश्विक खिलाड़ियों के विकास और उभरने पर निर्भर करती है।

'भारत-मध्य एशिया कनेक्टिविटी: क्षेत्रीय सहयोग और बहुपक्षीय भागीदारी' पर दूसरे सत्र की अध्यक्षता उज्बेकिस्तान में भारत के पूर्व राजदूत राजदूत विनोद कुमार ने की। सत्र के पैनलिस्ट थे- किर्गिस्तान के राष्ट्रपति के अधीन राष्ट्रीय सामरिक अध्ययन संस्थान, बिश्केक, किर्गिज़ गणराज्य में शोधकर्ता श्री नूरबेक ममितोव; श्री तुर्सुनोव बातिर एरकिनोविच, उप निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर सेंट्रल एशियन स्टडीज, ताशकंद, उज़्बेकिस्तान; और डॉ. मीना सिंह रॉय, सीनियर फेलो और हेड, वेस्ट एंड सेंट्रल एशिया सेंटर, तिलोत्तमा फाउंडेशन।

इस सत्र में बहुपक्षीय संबंधों के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग और कनेक्टिविटी पर चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत और सीएआर ने आईएनएसटीसी और अश्गाबात समझौते जैसे कनेक्टिविटी लिंक को मजबूत करने और चाबहार पोर्ट की क्षमता का उपयोग करने के लिए महत्वपूर्ण पहल की थी। उन्होंने नोट किया कि चाबहार पोर्ट भारत और मध्य एशियाई देशों के लिए कनेक्टिविटी में एक आवश्यक भूमिका निभा सकता है। टेली-एजुकेशन और टेली-मेडिसिन जैसे क्षेत्रों में भौतिक कनेक्टिविटी से परे जाने और डिजिटल कनेक्टिविटी का पता लगाने की आवश्यकता पर भी ध्यान दिया गया। प्रतिभागियों ने यह भी नोट किया कि एससीओ, सीआईसीए और ईईयू जैसे बहुपक्षीय मंच, संबंधों को सुधारने में महत्वपूर्ण हैं। वे भारत और व्यापक यूरेशियन क्षेत्र के बीच क्षेत्रीय सहयोग और बहुपक्षीय जुड़ाव के प्रक्षेपवक्र को समझने में भी सहायता कर सकते हैं।

'भारत-मध्य एशिया: सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंध' पर तीसरे सत्र की अध्यक्षता कज़ाखस्तान में भारत के पूर्व राजदूत अशोक सज्जनहार ने की। सत्र के वक्ता थे- श्री एवगेनी कबलुकोव, कार्यवाहक प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस एंड ओरिएंटल स्टडीज, किर्गिज़ नेशनल यूनिवर्सिटी, बिश्केक, किर्गिस्तान; ताजिकिस्तान गणराज्य की विज्ञान अकादमी के अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग के प्रमुख श्री ममुरदज़ोन मीरवाइजोव; प्रो. के. वारिकू, जेएनयू (सेवानिवृत्त), महासचिव, हिमालयन रिसर्च एंड कल्चरल फाउंडेशन, नई दिल्ली; और प्रो संजय पांडे, प्रोफेसर, रूसी और मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र, जेएनयू, नई दिल्ली।

तीसरे सत्र ने भारत और मध्य एशियाई क्षेत्र के बीच मजबूत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित किया। वक्ताओं ने सुझाव दिया कि दोनों पक्षों के पास विभिन्न सामान्य क्षेत्रों में उपयोगी संबंध बनाने के लिए एक मजबूत आधार है। उन्होंने उल्लेख किया कि द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक आधार पर विकसित किया जाना है। दोनों पक्षों को एक-दूसरे के बारे में जानकारी अपडेट करने की जरूरत है। यह एक तथ्य है कि एक नया भारत और एक नया मध्य एशिया है। कई वक्ताओं ने उन

पहलुओं को रेखांकित किया जो भारत और मध्य एशियाई देशों को आम सांस्कृतिक धारणाओं और लोगों से लोगों के जुड़ाव में बांधते हैं। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि युवा पीढ़ी को मीडिया संवेदीकरण के माध्यम से साझा विरासत से अवगत कराया जाना चाहिए। जहां तक साझा बौद्ध विरासत का संबंध है, इस क्षेत्र में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों को बहाल करने, उनकी रक्षा करने और अभिलेखों का दस्तावेजीकरण करने के लिए तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है। पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों और बढ़ी हुई हवाई कनेक्टिविटी की संभावनाओं पर जोर दिया गया।

'भारत-मध्य एशिया: ऊर्जा भू-राजनीति, अर्थव्यवस्था और व्यापार' पर चौथे सत्र की अध्यक्षता ताजिकिस्तान में भारत के पूर्व राजदूत योगेंद्र कुमार ने की। सत्र के पैनलिस्ट थे- श्री कैरट बातिरबायेव- कार्यकारी निदेशक, यूरेशियन इंटरनेशनल स्टडीज एसोसिएशन, अस्ताना, कज़ाखस्तान; श्री अमित कुमार, निदेशक, दक्षिण और मध्य एशिया, भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई), नई दिल्ली; और डॉ. महेश रंजन देबता सहायक प्रोफेसर, सेंटर फॉर इनर एशियन स्टडीज, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

चौथे सत्र में भारत और इस क्षेत्र के बीच आर्थिक संबंधों की व्यापक रूपरेखा पर प्रकाश डाला गया। यह सुझाव दिया गया कि आर्थिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की काफी गुंजाइश है। प्रत्यक्ष भूमि संपर्क की कमी के अलावा संरचनात्मक सीमाओं के परिणामस्वरूप अपेक्षाकृत कम उत्कृष्ट आर्थिक संबंध बने हैं। विभिन्न भारतीय राज्यों और मध्य एशियाई क्षेत्रों के बीच सीधे संपर्क का विकास इनमें से कुछ बाधाओं को दूर कर सकता है। यूक्रेन संघर्ष ने क्षेत्र में आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप विशेष रूप से ऊर्जा आपूर्ति मार्गों में विविधता लाने की आवश्यकता बढ़ रही है। भारत की ओर जाने वाले ऊर्जा मार्गों को इस क्षेत्र के लिए आशाजनक माना जाता है। यह नोट किया गया कि भारत और मध्य एशिया के बीच एक मजबूत निवेश संबंध बनाने को प्राथमिकता देने की जरुरत है; भारत के लिए, मध्य एशिया क्षेत्र सीआईएस और यूरोपीय बाजारों का प्रवेश द्वार है।

आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने समापन भाषण दिया। उन्होंने पाया कि भारत-मध्य एशिया संबंध गहन राजनयिक जुड़ाव और कनेक्टिविटी तथा ऊर्जा सहित कई क्षेत्रों में सहयोग में वृद्धि के साथ आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। यह सम्मेलन वैश्विक विकास, सामरिक वातावरण और भारत व मध्य एशिया के संबंधों पर इसके प्रभाव पर विचारों के आदान-प्रदान के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा। इस बदलते परिदृश्य में, सम्मेलन का उद्देश्य भारत और मध्य एशियाई देशों के साथ मिलकर काम करने की संभावनाओं का पता लगाना और इस प्रक्रिया में शामिल चुनौतियों की पहचान करना भी है।

डॉ. सुदीप कुमार, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "जापान-चीन विदेश-सुरक्षा संबंध" पर सप्रू हाउस पेपर (SHP) विमर्श, 19 दिसंबर 2022

डॉ. सुदीप कुमार, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए द्वारा लिखित "जापान-चीन विदेशी सुरक्षा संबंध" पर सप्रू हाउस पेपर डिस्कशन का आयोजन आईसीडब्ल्यूए द्वारा 19 दिसंबर 2022 को किया गया था। इसकी अध्यक्षता सेंटर फॉर इंटरनेशनल पॉलिटिक्स ऑर्गनाइजेशन एंड डिसआर्मामेंट (सीआईपीओडी), जेएनयू के प्रोफेसर स्वर्ण सिंह ने की। डॉ. संदीप मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, सेंटर फॉर ईस्ट एशियन स्टडीज, जेएनयू और डॉ. श्रीपर्णा पाठक, एसोसिएट प्रोफेसर, जिंदल स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (जेएसआईए) चर्चाकर्ता थे।

आईसीडब्ल्यूए और इंस्टीट्यूट फॉर फॉरेन पॉलिसी एंड स्ट्रैटेजिक स्टडीज, वियतनाम की डिप्लोमैटिक एकेडमी के बीच संवाद, 20 दिसंबर 2022

आईसीडब्ल्यूए ने अपने शोधार्थियों के साथ बातचीत के लिए पहुंचे तीन सदस्यीय वियतनामी प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी की, जिसमें इंस्टीट्यूट फॉर फॉरेन पॉलिसी एंड स्ट्रैटेजिक स्टडीज, डिप्लोमैटिक एकेडमी ऑफ वियतनाम (DAV) के महानिदेशक डॉ. वु ले थाई होआंग, इंस्टीट्यूट फॉर फॉरेन पॉलिसी एंड स्ट्रैटेजिक स्टडीज, डिप्लोमैटिक एकेडमी ऑफ वियतनाम (DAV) के सहायक महानिदेशक डॉ. गुयेन बिच न्गोक तथा इंस्टीट्यूट फॉर फॉरेन पॉलिसी एंड स्ट्रैटेजिक स्टडीज, डिप्लोमैटिक एकेडमी ऑफ वियतनाम (DAV) की रिसर्च फेलो सुश्री ले नु माई शामिल थे। बातचीत का संचालन आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह ने की। अपनी टिप्पणी में उन्होंने कहा कि भारत एक युवा राष्ट्र है लेकिन यह वसुधैव कुटुम्बकम के पुराने दर्शन के साथ एक पुरानी सभ्यता है। यह दर्शन हमारे जी-20 प्रेसीडेंसी का भी हिस्सा रहा है जो एक विश्व, एक परिवार, एक भविष्य की थीम पर आधारित है। भारत की विदेश नीति अहस्तक्षेप के मौलिक सिद्धांतों, संवाद के लिए समर्थन और कानून के शासन के सम्मान और सभी राष्ट्रों के सम्मान पर आधारित है। ये सिद्धांत भारत को प्रमुख शक्तियों के साथ अपने संबंधों में और एक सुरक्षित, मुक्त और समावेशी इंडो-पैसिफिक के निर्माण में मार्गदर्शन करते हैं।

IFPSS - DAV के महानिदेशक डॉ. वु ले थाई होआंग ने अपनी टिप्पणी में इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत और वियतनाम समान सिद्धांतों को साझा करते हैं जो उनकी विदेश नीति का मार्गदर्शन करते हैं। सामरिक स्वायत्तता वियतनाम के लिए महत्वपूर्ण है और इसकी विदेश नीति इसके राष्ट्रीय हित द्वारा निर्देशित है। वियतनाम चीन, रूस और अमेरिका के साथ अच्छे संबंध जारी रखना चाहेगा। वियतनाम इंडो-पैसिफिक महासागर की पहल को क्षेत्र के लिए भारत की दृष्टि की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में देखता है और गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों को संबोधित करने में भारत और वियतनाम के बीच सहयोग के लिए बहुत जगह है।

आउटरीच कार्यक्रम

"भारत की विदेश नीति के 75 वर्ष: उपलब्धियां और संभावनाएं" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 12-13 नवंबर 2022

डीएवी कॉलेज, कानपुर ने 12-13 नवंबर 2022 को भारत की विदेश नीति के 75 वर्ष: उपलब्धियां और संभावनाएं विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। सीनियर रिसर्च फेलो डॉ. स्तुति बनर्जी ने सेमिनार में परिषद का प्रतिनिधित्व किया। मुख्य उद्बोधन जिम्बाब्वे में भारत के पूर्व राजदूत जे.के. त्रिपाठी द्वारा दिया गया।

"कलादान मल्टी-मोडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट: संभावनाएं और समस्याएं" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 24-25 नवंबर 2022

मिजोरम विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग ने 24-25 नवंबर 2022 को आइजोल, मिजोरम में मिजोरम विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के सेमिनार हॉल में कलादान मल्टी-मोडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट: संभावना और समस्याएं पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी आईसीडब्ल्यूए और योजना एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग, मिजोरम सरकार द्वारा प्रायोजित की गई थी। सेमिनार के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि मिजोरम सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्री डॉ. आर. लालथंगलियाना थे। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि एनएचआईडीसीएल के कार्यकारी निदेशक के रूप में श्री वी.के. जाखड़ थे। डॉ. तेमजेनमेरेन एओ, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए ने परिषद की ओर से इसके प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी पांच प्रमुख महत्वपूर्ण क्षेत्रों - परिवहन, कनेक्टिविटी, व्यापार, सुरक्षा और नीति रणनीति, तथा सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरण पर केंद्रित थी।

"भारत-अरब संबंध: पुराने और नए प्रक्षेपवक्र को समझना" को दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 14-15 दिसंबर 2022

भारत अरब सांस्कृतिक केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया (JMI) ने 14-15 दिसंबर 2022 को नई दिल्ली में आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 'भारत-अरब संबंध: पुराने और नए प्रक्षेपवक्र को समझना' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। डॉ फज्जुर रहमान सिद्दीकी, सीनियर रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए ने इस कार्यक्रम में परिषद का प्रतिनिधित्व किया। सम्मेलन में उद्घाटन और समापन सत्र के अलावा आठ सत्र थे। उद्घाटन-सह पूर्ण सत्र 14 दिसंबर 2022 को विश्वविद्यालय के एफटीके सेंटर फॉर इंफॉर्मेशन एंड टेक्नोलॉजी (CIT) में आयोजित किया गया था।

भारतीय वैश्विक परिषद प्रकाशन

मुद्दा संक्षिप्त

1. डॉ. मोनिका गुप्ता, स्वीडन चुनाव 2022 को समझना (11 अक्टूबर 2022)
2. डॉ. स्तुति बनर्जी, भारत और पेरू: भविष्य के लिए तैयार साझेदारी का निर्माण (18 अक्टूबर 2022)
3. डॉ. तुनचिनमांग लैंगेल, उत्तर कोरिया के खतरे के बीच दक्षिण कोरिया-जापान सुलह की स्थिति (27 अक्टूबर 2022)
4. डॉ. तेमजेनमेरेन आओ, ऊर्जा लचीलापन और सुरक्षा के लिए आसियान और इसकी खोज (10 नवंबर 2022)
5. आश्रिति गौतम, एजियन सागर को लेकर ग्रीस-तुर्की विवाद (14 नवंबर 2022)
6. डॉ. श्रबाना बरुआ, एफएटीएफ की 'ग्रे लिस्ट' से पाकिस्तान को बाहर किया गया: वैश्विक आतंकवाद विरोधी प्रयासों और इस्लामाबाद के लिए निहितार्थ (14 नवंबर 2022)
7. डॉ. तुनचिनमंग लंगेल, "व्यापक सामरिक साझेदारी" की दिशा में दक्षिण कोरिया और वियतनाम की प्रगति पर विचार (18 नवंबर 2022)
8. डॉ. सुरभि सिंह, भारत की जी20 अध्यक्षता में एक प्रवासन और गतिशीलता ट्रैक की आवश्यकता (21 नवंबर 2022)
9. डॉ. अन्वेशा घोष, दीर्घकालिक सीमा विवाद और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान ने तालिबान और पाकिस्तान के बीच फिर तनाव बढ़ाया (07 दिसंबर 2022)
10. डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय, कनाडा ने औपचारिक रणनीति के साथ हिंद-प्रशांत को अपनाया (09 दिसंबर 2022)
11. डॉ. समथा मल्लेम्पति, जुलाई 2022 के बाद श्रीलंका में विकास:अर्थव्यवस्था और राजनीति (20 दिसंबर 2022)
12. डॉ. फ़ज़्ज़ुर रहमान सिद्दीकी, इस्तांबुल विस्फोट और इसके निहितार्थ: एक अवलोकन (21 दिसंबर 2022)
13. डॉ. तुनचिनमांग लांगेल, जापान की नई राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति 2022 का महत्व (26 दिसंबर 2022)
14. कौशिक नाग, दक्षिण एशिया में संवर्धित शक्ति सहयोग (28 दिसंबर 2022)
15. तरवीन कौर, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती जर्मन भागीदारी (28 दिसंबर 2022)
16. डॉ. गाथा नौटियाल, यूरोपीय संघ का सीमा बाहरीकरण दृष्टिकोण: सीमा प्रबंधन पर यूरोपीय संघ-मिस्र सहयोग का मामला (30 दिसंबर 2022)
17. ऊंमोना दास, कौशल को औपचारिक बनाना, गतिशीलता को प्रोत्साहित करना: श्रीलंका के कौशल पासपोर्ट और बहरीन के नए कार्य परमिट पर मामला अध्ययन (30 दिसंबर 2022)

दृष्टिकोण

1. डॉ. समथा मल्लेम्पति, मालदीव: क्षेत्र में एक बड़ी भूमिका की खोज (4 अक्टूबर 2022)
2. डॉ. गौरी नारायण माथुर, विलियम रूटो की प्रेसीडेंसी: संग्रहागार में क्या है? (13 अक्टूबर 2022)
3. डॉ. संजीव कुमार, चीन की 20 वीं पार्टी कांग्रेस और 'पार्टी निर्माण' परियोजना (17 अक्टूबर 2022)

4. डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय, अमरीका-प्रशांत द्वीप शिखर सम्मेलन और प्रशांत साझेदारी रणनीति: एक आकलन (18 अक्टूबर 2022)
5. डॉ. मोनिका गुप्ता, लातिन अमेरिका में 'नया वाम' और उसका सत्ता में आना (03 नवंबर 2022)
6. डॉ. स्तुति बनर्जी, 'नया वाम' और लैटिन अमेरिका में इसका सत्ता में आना (11 नवंबर 2022)
7. डॉ. तेमजेनमेरेन आओ, हिन्द–प्रशांत पर आसियान का दृष्टिकोण (18 नवंबर 2022)
8. डॉ. फज़्ज़ुर रहमान सिद्दीकी, नेतन्याहू की सत्ता में वापसी: एक आकलन (01 दिसंबर 2022)
9. डॉ. लक्ष्मी प्रिया, यूक्रेन में ईरानी ड्रोन के निहितार्थ (14 दिसंबर 2022)
10. डॉ. तेशु सिंह, चीनी प्रवासी पुलिस स्टेशनों की सत्यता (19 दिसंबर 2022)
11. डॉ. प्रज्ञा पांडे, चीन का पहला हिंद महासागर क्षेत्र मंच और क्षेत्र में इसकी बढ़ती मुखरता (21 दिसंबर 2022)
12. डॉ. हिमानी पंत, रूस के लिए यूरेशियन आर्थिक संघ की बढ़ती प्रासंगिकता (22 दिसंबर 2022)
13. इशानी अग्निहोत्री, लीबिया में राजनीतिक गतिरोध (30 दिसंबर 2022)

विशेष रिपोर्ट

1. डॉ. फज़्ज़ुर रहमान सिद्दीकी, लेबनान-इजरायल मैरीटाइम डील: एक कदम आगे दो कदम पीछे की ओर

आईसीडब्ल्यूए अतिथि कॉलम

1. डॉ. आलोक शील एवं राजदूत मंजीव सिंह पुरी और दामोदर पुजारी, 'G20@2023: भारत की अध्यक्षता: दो निबंध' (12 अक्टूबर 2022)
2. राजदूत पीएस राघवन, राजदूत डीबी वेंकटेश वर्मा, प्रो. स्वर्ण सिंह और प्रो. उम्मू सलमा बावा, 'यूक्रेन क्राइसिस: ए पॉइंट ऑफ़ इन्फ़्लेक्शन फ़ॉर द इमर्जिंग वर्ल्ड ऑर्डर' (12 दिसंबर 2022)

सप्रू हाउस पेपर्स

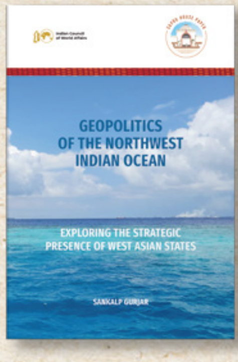

Geopolitics of the Northwest Indian Ocean: Exploring the Strategic Presence of West Asian States

By Dr. Sankalp Gurjar,

(Indian Council of World Affairs 2022)

Changing Foreign Policy of Smaller Gulf States: A Case Study of the UAE

By Dr. Lakshmi Priya,

(Indian Council of World Affairs 2022)

Why Visegrad 4?: Prospects of India – V4 Cooperation

By Dr. Ankita Dutta,

(Indian Council of World Affairs 2022)

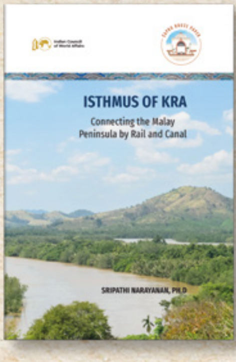

ISTHMUS OF KRA: Connecting the Malay Peninsula by Rail and Canal

By Dr. Sripathi Narayanan,

(Indian Council of World Affairs 2022)

विशेष प्रकाशन

'G20@2023: India's Presidency: Two Essays'

By Dr. Alok Sheel and Amb. Manjeev Singh Puri & Damodar Pujari

(12 October, 2022)

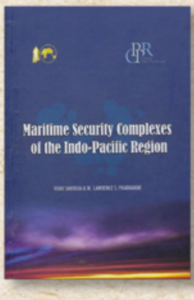

'Maritime Security Complexes of the Indo-Pacific Region', Joint ICWA-CPPR Publication

By Vijay Sakhuja & W. Lawrence S. Prabhakar,

(06 December 2022)

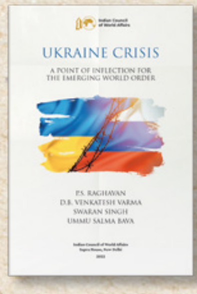

'Ukraine Crisis: A Point of Inflection for the Emerging World Order'

By Amb. P.S. Raghavan, Amb. D.B. Venkatesh Varma, Prof. Swaran Singh & Prof. Ummu Salma Bava,

(12 December 2022)

इण्डिया क्वार्टरली, ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स

"अफगानिस्तान पर विशेष अंक"

खंड 78, अंक 4, अक्टूबर-दिसंबर 2022

संपादकीय

2001 में काबुल में तालिबान की वापसी ने बड़े पैमाने पर आदिवासी, विभाजित और कट्टरपंथी अफगानिस्तान में लोकतांत्रिक राष्ट्र-निर्माण की अनियोजित नीतियों को अंतिम तौर पर झटका दे दिया है। हालांकि इससे अफगानिस्तान में पश्चिमी गठबंधन के अंत के बारे में सवाल उठे हैं, यह भी पता चला है कि तालिबान के बाद की राष्ट्रीय सरकार पहले और अब, दूसरे तालिबान शासन के बीच एक अंतराल मात्र थी। और, एक बार फिर, इसने इस्लामिक स्टेट और इसकी कई क्षेत्रीय शाखाओं के उदय के साथ अत्यधिक जटिल स्थिति को देखते हुए, राजनीतिक रूप से कमजोर राज्य में आवाज उठा रहे अफगान कट्टरपंथी समूहों के बीच उभरे नए गठजोड़ों और सीमाओं के पार उनके फैलाव को रोकने में अफगानिस्तान के पड़ोसियों के दांव को देखते हुए शासन की प्रकृति पर सवाल उठाए हैं।

इंडिया क्वार्टरली का यह अंक इनमें से कई मुद्दों को संबोधित करता है। जैसा कि एक लेख में बताया गया है, अफगानिस्तान 'एक सुरक्षा निर्वात और लगभग विफल राज्य के क्रॉसहेयर में है, जहां इसकी आबादी का बढ़ता कट्टरपन एक अपरिहार्य वास्तविकता प्रतीत होती है'। नए तालिबान शासन के लिए एक आसन्न खतरा इस्लामिक स्टेट-खुरासान प्रांत (IS-KP) से है, जो 2015 से राज्य के अधिक से अधिक कट्टरपंथीकरण की मांग और अफगान शासन के लिए एक पैन-इस्लामिक दृष्टि की मांग को देखते हुए तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। 1980 के मुजाहिदीन में अपनी जड़ें जमाने वाले अल-कायदा (ज्यादातर अफगान-अरब) जैसे अन्य जिहादी समूह भी तालिबान की सहिष्णुता को देखते हुए अफगानिस्तान में संघर्ष को आकार दे रहे हैं। यह लाइन-अप तालिबान के पहले अवतार से अलग घरेलू और विदेश नीति के लिए अल्प स्थान प्रदान करता है, जैसा कि एक अन्य लेख में कहा गया है। उप महाद्वीप में अफगानिस्तान के भूस्थैतिक स्थान से विदेश नीति के विकल्प भी बाधित होते हैं, जैसा कि एक अन्य लेखक ने 'अफगानिस्तान, भारत और पाकिस्तान के बीच एक गतिशील त्रिकोणीय संबंध द्वारा आकार दी गई...' नीति के साथ बताया है, जिसमें क्षेत्र में स्थिरता को संबोधित करने की बहुत कम संभावना है।

फिर भी, यह वस्तुनिष्ठ स्थिति कई मोर्चों पर नई नीतियों के लिए गुंजाइश भी प्रदान करती है। 2022 में, तालिबान आकांक्षाओं और अवसरों के एक अलग सेट का सामना कर रहा है। जिहादी युद्ध अब राज्य का उद्देश्य नहीं हो सकता। इसके पहली बार आने और दूसरी बार आने के बीच के वर्षों ने इसकी युवा आबादी के लिए समृद्धि और कल्याण की नई आकांक्षाओं के बीज भी बोए हैं; महिलाओं के अधिकारों के ज्वार को लंबे समय तक छिपाए रखना संभव नहीं हो सकता है और तालिबान की अपनी महत्वाकांक्षा को वैश्विक समुदाय का हिस्सा माना जाता है क्योंकि यह अफगानिस्तान को एक सतत विफल राज्य बनने से अलग धीरे-धीरे भारत जैसे पड़ोसियों से निपटने में अधिक व्यावहारिकता की ओर ले जा रहा है।

मधु भल्ला
संपादक, इंडिया क्वार्टरली,
भारतीय वैश्विक परिषद

भारतीय वैश्विक परिषद के बारे में

भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ एच.एन. कुंजरू के नेतृत्व में प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। परिषद आज एक आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति शोध करती है। यह सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज परिचर्चाओं, व्याख्यानों सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला नियमित रूप से आयोजित करती है और कई प्रकाशनों का प्रकाशन करती है। इसमें एक बहुत सी पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय, एक सक्रिय वेबसाइट है, और यह 'इंडिया क्वार्टरली' पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आईसीडब्ल्यूए ने अंतरराष्ट्रीय थिंक टैंकों और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन किए हैं। परिषद् की भारत में अग्रणी शोध संस्थानों, थिंक टैंकों और विश्वविद्यालयों के साथ भी साझेदारी है।

मेंटर	:	राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली
संपादक	:	श्रीमती नूतन कपूर महावर, संयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली
प्रबंध संपादक	:	डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए
सहायक संपादक	:	डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, अनुसंधान अध्येता, आईसीडब्ल्यूए
सहायक	:	सुश्री अन्विति मोहिले, सहायक प्रबंधक, MyGov/आईसीडब्ल्यूए

हमसे जुड़ें

/Sapru.House @ICWA_NewDelhi /ICWA_NewDelhi www.icwa.in

/company/indian-council-of-world-affairs1

आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रक
वेबसाइट: https://www.icwa.in; दूरभाष नं 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638